जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मार्च 2025 ।। अंक – 56 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

स्वरोजगार से आत्मनिर्भरता
(पृष्ठ – 02)

मेहनत और जीविका के मार्गदर्शन से बदली तकदीर
(पृष्ठ – 03)

सशक्तिकरण की ओर जीविका दीदियाँ: सामाजिक विकास के बहुआयामी प्रयास
(पृष्ठ – 04)

जीविका के प्रयास से परंपरागत व्यवसायों में महिलाओं की बढ़ी भागीदारी और नवाचार

बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परंपरागत व्यवसायों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सदियों से कृषि, पशुपालन, बुनकर, हथकरघा, सिलाई–कढ़ाई, कुटीर उद्योग, लाह–चूड़ी निर्माण, अगरबत्ती निर्माण, हस्तशिल्प एवं लघु उद्योग ग्रामीण लोगों की जीविकोपार्जन का प्रमुख स्रोत रहे हैं। पहले इन व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी सीमित थी, लेकिन जीविका के प्रयासों से अब महिलाएँ संगठित होकर इन व्यवसायों में न केवल अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं, बल्कि नवाचार के माध्यम से इन्हें आधुनिक स्वरूप भी दे रही हैं।

महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि

ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाने हेतु जीविका स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। पारंपरिक व्यवसायों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिए जीविका स्वयं सहायता समूह के माध्यम से जागरूक किया गया। इन समूहों ने महिलाओं को वित्तीय सहयोग, प्रशिक्षण और बाजार तक पहुँच प्रदान की है। पहले जो महिलाएँ केवल घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, वे अब कृषि, लघु उद्यम, डेयरी व्यवसाय, बुनकरी, हस्तशिल्प, बांस कला और मधुबनी पेंटिंग जैसे कार्यों में संलग्न होकर आत्मनिर्भर बन रही हैं।

प्रमुख परंपरागत व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी

1. बुनाई और हथकरघा उद्योग

बिहार के कई जिलों में जीविका की महिलाएँ पारंपरिक बुनाई और हथकरघा उद्योग का कार्य कर रही हैं। वे सूती और रेशमी वस्त्रों का उत्पादन कर रही हैं, जिससे स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा मिल रहा है। भागलपुर में तसर सिल्क और मधुबनी पेंटिंग ने अपनी अलग पहचान बनाई है और जीविका समूहों की महिलाएँ इन कलाओं में कुशलता प्राप्त कर बिहार की इस विरासत को नए स्वरूप के साथ आगे बढ़ा रही हैं तथा इसके संचालन से आत्मनिर्भर बन रही है।

2. जैविक खेती और नवाचार

पारंपरिक कृषि को अधिक लाभकारी बनाने के लिए जीविका की महिलाएँ जैविक खेती को बढ़ावा दे रही हैं। अनेक नई तकनीक को अपनाकर उपज में बृद्धि कर रही है। वे केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट), जैविक कीटनाशक और मिश्रित खेती का उपयोग कर बेहतर उत्पादन प्राप्त कर रही हैं। साथ ही, महिलाएँ बागवानी, मशरूम उत्पादन और औषधीय पौधों की खेती जैसे नवाचारों को भी अपना रही हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो रही है।

3. डेयरी और पशुपालन व्यवसाय

दुग्ध उत्पादन बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में एक प्रमुख व्यवसाय है। जीविका के तहत महिलाएँ आधुनिक डेयरी प्रबंधन तकनीकों को अपनाकर दुग्ध उत्पादकता में वृद्धि कर रही हैं। उन्नत नस्ल की गायों और भैंसों को पालकर वे अधिक दूध का उत्पादन कर रही हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो रही है। इसके अलावा, वे मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, बतख पालन और बकरीपालन जैसे जीविकोपार्जन गतिविधियाँ को भी कर रही है।

4. हस्तशिल्प और पारंपरिक कलाएँ

मधुबनी पेंटिंग, बांस कला, अगरबत्ती निर्माण और अन्य हस्तशिल्प उद्योगों में महिलाएँ नवाचार कर रही हैं। वह पारंपरिक कलाओं को आधुनिक उत्पादों के साथ जोड़कर नई पहचान बना रही हैं। अब मधुबनी चित्रकला को केवल दीवारों तक सीमित न रखकर इसे परिधान, घरेलू सजावट और स्टेशनरी उत्पादों में भी उपयोग किया जा रहा है, जिससे इन वस्तुओं का मूल्य संवर्धन भी हुआ है। महिलाएँ इससे अधिक आय अर्जित कर रही हैं।

नवाचार और डिजिटल तकनीक का उपयोग

वर्तमान में स्वयं सहायता समूह की दीदियाँ डिजिटल तकनीक का उपयोग कर अपने उत्पादों को ऑनलाइन बेच रही हैं। सोशल मीडिया, ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म और डिजिटल भुगतान प्रणालियों के सहयोग से वे अपने व्यवसाय को नई दिशा प्रदान कर रही हैं। इसके अलावा, 'दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' के तहत उन्हें वित्तीय साक्षरता, उद्यमिता और विपणन की प्रशिक्षण दी जा रही है, जिससे वे अपने व्यवसाय को बेहतर तरीके से प्रबंधित एवं संचालित कर पा रही हैं।

आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण

परंपरागत व्यवसायों में भागीदारी से महिलाएँ न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं, बल्कि उनके सामाजिक जीवन में भी बदलाव आ रहा है। वह अब अपने परिवार में निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, जिससे समाज में उनकी स्थिति सुदृढ़ हुई है। वह आत्मविश्वास के साथ अपने व्यवसायों का संचालन कर रही हैं।

जीविका के प्रयासों से बिहार की ग्रामीण महिलाएँ उद्यम संचालन में अधिक सक्रिय हो रही हैं और नवाचार के माध्यम से इन्हें आधुनिक स्वरूप भी दे रही हैं। उद्यम संचालित कर वे आत्मनिर्भर बन रही हैं और उनके जीवन स्तर में सुधार हो रहा है। सरकारी योजनाओं और तकनीकी सहयोग से यह बदलाव और व्यापक हो रहा है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिल रहा है। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और नवाचार से बिहार में आर्थिक और सामाजिक विकास को नई दिशा मिल रही है।

स्वरोजगार से आत्मनिर्भरता

किशनगंज जिला के बहादुरगंज प्रखंड अन्तर्गत चुनियामारी गाँव की रहने वाली रूही सिन्हा अपने पति तोपन सिन्हा के साथ मिलकर व्यवसाय संचालन कर आत्मनिर्भर बनने की राह पर अग्रसर हैं। वह महादेव जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं एवं तिरंगा जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की भी सदस्य हैं। पहले उनके घर में आय का कोई निश्चित साधन नहीं था, लेकिन जीविका से जुड़ने के बाद उनकी आर्थिक स्थिति में बड़ा बदलाव आया है।

रूही सिन्हा ने समूह से ऋण लेकर बर्तन और घरेलू सामान की दुकान शुरू की थी। दुकान चलाने में उनके पति भी सहयोग करते हैं। धीरे–धीरे उनकी आमदनी बढ़ी और अब वह हर महीने तकरीबन 10 से 15 हजार रुपये तक कमाती हैं। इस व्यवसाय से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। उनके बच्चों की शिक्षा और घर–गृहस्थी में भी सुधार आया है।

शिक्षित होने के कारण रूही सिन्हा का चयन सामुदायिक उत्प्रेरक के रूप में हुआ। वह 10 स्वयं सहायता समूहों का लेखा–जोखा संभालती हैं, जिससे उन्हें नियमित मानदेय प्राप्त होता है। जीविका से जुड़ने के बाद उन्हें बचत, ऋण और बैंकिंग सेवाओं के बारे में विस्तृत जानकारी मिली, जिसने उन्हें स्वरोजगार के लिए भी प्रेरित किया।

आज, अपनी दुकान और सामुदायिक उत्प्रेरक के रूप में मिलने वाले मानदेय से रूही सिन्हा का जीवन स्तर पहले से बेहतर हो गया है। जीविका से जुड़कर उन्होंने न सिर्फ आर्थिक स्वावलंबन हासिल किया है, बल्कि वह अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनी है।

स्वावलंबन की ओर एक सफल कदम

मधेपुरा जिले के मधेपुरा प्रखंड अंतर्गत बेलहा घाट गाँव की मंजू कुमारी ने जीविका के सहयोग से आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनी है। वह संतोषी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं एवं सहेली जीविका महिला ग्राम संगठन से जुड़ी हुई हैं। उनके पति धीरेन्द्र राम स्थानीय स्तर पर दैनिक मजदूरी करते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। मंजू कुमारी स्वयं शिक्षित थीं और परिवार के उत्थान के लिए कुछ करना चाहती थीं।

साल 2009 में सामुदायिक उत्प्रेरक से प्रेरित होकर वे जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किए। पहले उनके पास एक छोटी सी दुकान थी, जिसे उन्होंने समूह से 10,000 रुपये का ऋण लेकर उसमें पूंजी बढ़ायी। बाद में 50,000 रूपये का ऋण लेकर सब्जी की दुकान शुरू की। कृषि गतिविधियाँ की जानकारी होने के कारण उनका चयन ग्रामीण संसाधन सेवी के रूप में हुआ।

जीविका की एक पहल के तहत, सामुदायिक गतिविधियों में विक्रेता के रूप में स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों को प्रोत्साहित किया गया। इस पहल के अंतर्गत, मंजू कुमारी को मधेपुरा सदर अस्पताल में संचालित जीविका दीदी की रसोई में सब्जी आपूर्ति के लिए चयनित किया गया। वह प्रतिदिन 40 से 50 किलोग्राम सब्जी की आपूर्ति करती हैं, जिससे उन्हें प्रति किलोग्राम 2–3 रुपये का लाभ होता है। इस कार्य से उनकी मासिक आमदनी बढ़कर 25,000 से 30,000 रुपये हो गई है।

मंजू कुमारी के अनुसार, जीविका से जुड़ने के बाद उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। पहले जीवनयापन कठिन था, लेकिन अब उनके पास एक स्थायी व्यवसाय है। इस व्यवसाय को वह पूरे समर्पण से कर रही हैं। यह उनके आत्मनिर्भरता हेतु एक लाभकारी कदम साबित हुआ है।

मेहनत और जीविका के मार्गदर्शन से बदली तकदीर

जमुई जिला के जमुई सदर प्रखंड के हरला गाँव की रहने वाली सोनी बिन्द ने अपने जीवन में कई उतार–चढ़ाव देखे। उनके पति गणेश कुमार बिन्द दिल्ली में एक कंपनी में सुपरवाइजर थे। लेकिन वर्ष 2020 में लॉकडाउन के कारण वे काम गंवा बैठे जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। परिवार के भरण–पोषण के लिए दोनों ने मजदूरी करनी शुरू किया, लेकिन आय स्थायी नहीं था। इसी बीच, सोनी बिन्द सुमन जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और 20,000 रुपये का ऋण लेकर किराना दुकान शुरू किया। उनके पति दुकान का सामान लाने में मदद करने लगे, जिससे धीरे–धीरे व्यापार बढ़ने लगा।

उन्होंने अपने समूह से आगे बारी–बारी से 30000, 50000 और 100000 रुपये का ऋण लिया। आरसेटी से ब्यूटीशियन और सिलाई का प्रशिक्षण लेकर उन्होंने घर पर ही सिलाई और पार्लर का काम भी शुरू किया। गाँव की अन्य महिलाएँ भी उनके पास सिलाई का काम कराने लगीं, जिससे उनकी आमदनी और बढ़ी। उनके पति ने बैंक से ऋण लेकर एक ट्रैक्टर खरीदा और अपने तीन बीघा खेत तथा दो बीघा जमीन में बटाई पर खेती करने लगे। वे धान, गेहूँ और सब्जियों की खेती कर रहे हैं।

सोनी बिन्द ने पाँच बकरियाँ भी खरीदीं, जो अब बढ़कर 12 हो गई हैं। अब वे सभी स्रोतों से प्रतिमाह 30000 से 35000 रुपये कमा रही हैं और 'लखपति दीदी' बन चुकी हैं। सोनी बिन्द अब और आगे बढ़ने का लक्ष्य रखती हैं। उनका मानना है कि मेहनत और सही मार्गदर्शन से जीवन बदला जा सकता है।

संघर्ष से सफलता तक का सफर

रीना देवी, मुजफ्फरपुर जिला के गायघाट प्रखंड अंतर्गत दाहिला पत्सर्मा पंचायत की निवासी हैं। अपनी मेहनत और जीविका के सहयोग से आत्मनिर्भर बनी हैं। वह गुलाब जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं, जो रौशनी जीविका महिला ग्राम संगठन के अंतर्गत आता है और माँ जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ का हिस्सा है।

पूर्व में रीना देवी और उनके परिवार के सदस्य भरण–पोषण के लिए दूसरों के खेतों में दैनिक मजदूरी करते थे। साल 2016 में, सामुदायिक संसाधन सेवी के माध्यम से वह जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए शुरुआत में उनके परिजन समूह में जुड़ने के लिए राजी नहीं थे, लेकिन रीना देवी के समझाने पर वे सहमत हो गए।

समूह से जुड़ने के बाद, रीना देवी ने स्वयं सहायता समूह से 25,000 रुपये ऋण लेकर खेती शुरू की। उनके पति ने भी इस कार्य में सहयोग दिया। उन्नत तकनीकों का उपयोग करने से उन्हें अच्छा लाभ हुआ। खेती में सफलता के बाद उन्होंने पुनः 30,000 रुपये का ऋण लिया, जिससे उन्नत कृषि उपकरण खरीदे। इससे खेती करना आसान हुआ और आय में वृद्धि भी हुई।

उनकी मेहनत और लगन को देखते हुए ग्राम संगठन से उन्हें प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना (पीएमएफएमई) के तहत 40,000 रुपये का सहयोग मिला, जिससे उन्होंने आटा चक्की मशीन खरीदी। वर्तमान में वह खेती के साथ–साथ आटा चक्की चलाते हैं। दोनों गतिविधियों से उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है। उनकी मासिक आय बढ़कर 25,000 से 30,000 रुपये हो गयी है। इससे ऋण की अदायगी समय पर कर रही हैं और अपने परिवार का पालन–पोषण बेहतर तरीके से कर पा रही हैं। रीना देवी की कहानी यह दर्शाती है कि आत्मनिर्भरता के लिए संघर्ष और सही मार्गदर्शन कितना महत्वपूर्ण होता है।

सशक्तिकरण की ओर जीविका दीदियाँ: सामाजिक विकास के बहुआयामी प्रयास

किशनगंज जिले में जीविका स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। सूक्ष्म ऋण और जीविकोपार्जन के साधन विकसित करने के साथ–साथ सामाजिक विकास पर भी जोर दिया जा रहा है। इसके तहत जन–जागरूकता और अन्य गतिविधियों को प्राथमिकता दी जा रही है, जिनमें खाद्य एवं स्वास्थ्य सुरक्षा निधि, सामुदायिक पुस्तकालय सह कैरिअर बिकास केंद्र, जीविका दीदी की नर्सरी, बृक्षारोपण, जल–जीवन–हरियाली अभियान, नशा मुक्ति, बाल विवाह रोकथाम और दहेज उन्मूलन जैसे अभियान शामिल हैं।

खाद्य सुरक्षा निधि :

इस निधि के तहत प्रत्येक ग्राम संगठन को 1 लाख रुपये दिए जाते हैं, जिससे जरूरतमंद जीविका दीदियों के लिए खाद्यान्न की खरीद की जाती हैं। इस राशि से हर तीन महीने में एक खरीदारी चक्र पूरा होता है, जिससे साल भर में कुल चार चक्र पूरे किए जाते हैं। अब तक किशनगंज जिले में 855 ग्राम संगठनों को इस निधि का लाभ मिला है।

स्वास्थ्य सुरक्षा निधि :

यह निधि जीविका दीदियों को बीमारी के इलाज हेतु आर्थिक मदद प्रदान करती है। प्रत्येक ग्राम संगठन को 50 हजार रुपये की राशि दी जाती है, जिससे जरूरतमंद दीदियों को स्वास्थ्य लाभ हेतु तत्काल सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इस पहल का उद्देश्य बीमारी के वक्त में महिलाओं को महाजनों के कर्ज से बचाना है। अब तक 1089 ग्राम संगठनों को इस योजना की राशि प्रदान की गयी है।

जीविका दीदी की नर्सरी :

पर्यावरण संरक्षण एवं हरित आवरण निर्माण हेतु पौधरोपण को बढ़ावा देने के लिए जिले में कुल 11 जीविका दीदी की नर्सरी कार्यरत हैं। इनमें से 4 नर्सरी से वन विभाग और 7 नर्सरी से मनरेगा के लिए पौधे उपलब्ध कराए जाते हैं। यह पहल जीविका दीदियों के लिए जीविकोपार्जन का एक सशक्त साधन बन रही है।

जल–जीवन–हरियाली अभियान एवं पौधरोपण :

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए बिहार सरकार के जल–जीवन–हरियाली अभियान के तहत पौधरोपण को बढ़ावा दिया जा रहा है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में अब तक 1.52 लाख पौधे लगाए गए हैं, जिनमें मुख्य रूप से आम, जामुन, अमरूद, कटहल, महोगनी, अर्जुन आदि के पौधे शामिल हैं। पिछले वित्तीय वर्ष 2022–23 में 1.04 लाख पौधारोपण के लक्ष्य पूरा करते हुए एक मिसाल कायम की थी।

सामुदायिक पुस्तकालय सह कैरियर विकास केंद्र :

किशनगंज जिला के बहादुरगंज और टेढ़ागाछ प्रखंड में सामुदायिक पुस्तकालय सह करियर विकास केंद्र संचालित किए जा रहे हैं, जहां छात्रों को विषयगत पुस्तकों के साथ–साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है। इन केंद्रों में डिजिटल कक्षाओं की भी सुविधा दी गई है। इन प्रयासों से लगभग 2,000 विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

जन–जागरूकता अभियान :

जीविका दीदियाँ अपने गाँव–समाज में बाल विवाह रोकथाम, दहेज प्रथा निषेध और नशा मुक्ति के लिए सक्रिय रूप से जागरूकता अभियान चला रही हैं। प्रभातफेरी, चौपाल, गृहभ्रमण, रैली, शपथ ग्रहण, और ऑडियो–वीडियो प्रसारण के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

मिशन अंत्योदय :

गाँव स्तर पर मिशन अंत्योदय कार्यक्रम के तहत प्रत्येक परिवार का सर्वे किया जाता है। इस प्रक्रिया में सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों की पहचान की जाती है और वंचित परिवारों की जानकारी संकलित की जाती है। साथ ही, स्कूल, कॉलेज, डाकघर, सड़क और पंचायत भवन जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता पर भी ध्यान दिया जाता है।

गाँव गरीबी उन्मूलन योजना :

इस योजना के तहत गाँव और पंचायत स्तर पर आवश्यकता आधारित विकास योजनाएँ तैयार की जाती हैं। यह योजना स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघों के जरिए सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है। इसका उद्देश्य सामाजिक समावेशन और आजीविका बढ़ाने के लिए सरकारी योजनाओं की प्रभावी मांग को प्रस्तुत करना है।

दीदी अधिकार केंद्र :

जीविका दीदियों को उनके हक और अधिकारों के प्रति जागरूक करने तथा सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने के उद्देश्य से दीदी अधिकार केंद्र स्थापित किए गए हैं। घरेलू हिंसा, परित्याग और लिंग आधारित भेदभाव से पीड़ित महिलाओं के पुनर्वास के लिए दीदी अधिकार केंद्र द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। यहाँ जीविका दीदियों को चिकित्सा, कानूनी सहायता, परामर्श, आश्रय और पुनर्वास की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। साथ ही स्वयं सहायता समूह सदस्यों को विभिन्न सरकारी योजनाओं यथा – आयुष्मान कार्ड, पेंशन योजना इत्यादि का भी लाभ दिलाया जा रहा है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार